नाम — रेनू गौतम

मो0नं0 — 9628774586

सतत विकास के लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका

सतत विकास में लक्ष्यों की पूर्ति में युवाओं की भूमिका अत्यंत आवश्यक होती है किसी भी राष्ट्र के संपूर्ण विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उस राष्ट्र के युवा जागरुक शिक्षित एवं सब है हो कागज की नाव बनाना छोड़ कर अब समुद्र की बारी है किसी भी राष्ट्र के संपूर्ण विकास एवं उसकी उन्नत हित राष्ट्र की सेवा का जागरूक एवं कर्मठ होना अत्यंत आवश्यक है–

जुबां से कुछ ना कहा जाए तो अच्छा है
अपने कर्तव्यों में ही रह जाए तो अच्छा है
दुनिया में जान पहचान तो ठीक है
मगर खुद से खुद की जान पहचान हो जाए तो अच्छा है

हम अपने भारत को भारत माता कहते हैं ना कि अमेरिका माता या नेपाल माता क्योंकि हमारा भारत सदैव से ही विश्व गुरु रहा है और हम अपने देश को अपनी माता कहता संबोधित करते हैं आज भारत की 70ः जनसंख्या युवा और इसी के साथ भारत दुनिया का तीसरा सबसे युवा राष्ट्रीय युवा शक्ति केवल परिवार या समाज में निहित ना होकर संपूर्ण राष्ट्र में निर्भर होती है हमें अपने राष्ट्र के सर्वागीण विकास में योगदान देने हेतु युवाओं को जागृत करना होगा और इसके लिए महारानी लाल कुंवारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा युवाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता रहा है इसके महाविद्यालय की जो युवा हैं वह अपने योगदान को राष्ट्रहित में समझ सके और राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

मुश्किलों से कह दो अभी ठहरी नहीं हूं मैं

मंजिल से कह दो अभी पहुंची नहीं हूं मैं

दूजे साथ ना देंगे नतीजा तुम्हें जुड़ेगा खुद से खुद की पहचान बदल तो मंजिल भी तेरे कदम चूमेगा।

किसी भी राष्ट्र के सतत विकास के लिए युवाओं का सभी एवं कर्मठ होना चाहिए जिसके लिए प्रत्येक देश में शिक्षा का प्रसार एवं राष्ट्रीयता की भावना विकसित होनी चाहिए वैसे तो किसी भी राष्ट्र की उन्नति हेतु यह

आवश्यक नहीं है कि राष्ट्र में केवल आईएएस पीसीएस ही हूं अभी तो एक व्यापारी एक–एक शिक्षक आज भी राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कि बुझी नहीं हूं मैं चिंगारी

अभी भी बाकी है।

अरे खींच दे डोर तू धनुष की

मंजिल का तो बाद में देखेंगे

पहले की तीर कहां तक जाती है।

दुनिया इतने सारे देश हैं और उन देशों में इतने सारे लोग हैं परंतु सभी शिक्षक एवं जागरूक तो बिल्कुल भी नहीं और राष्ट्रीय निर्माण भेजो सबसे अधिक विघ्न उत्पन्न करता है वह है अशिक्षा बेरोजगारी गरीबी और भूखमरी इन सबके चलते युवाओं में कुंठा निराशा एवं विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है।

जिससे वे दंगा मारपीट तोड़फोड़ एवं सामाजिक भ्रष्टाचार की ओर अग्रसर होते हैं।

निष्कर्ष –

सतत विकास का अर्थ संपूर्ण विकास की ओर से विकास चाहे वह शिक्षा के क्षेत्र में खेल के क्षेत्र में हो या व्यापार के क्षेत्र में हो खेल के क्षेत्र में हो या व्यापार के क्षेत्र में हो जिसके लिए कई राष्ट्रों ने मिलकर राष्ट्र के सतत विकास हेत 2030 तक कई लक्ष्यों की पूर्ति का उद्देश रखा है जिसमें 17 उद्देश उल्लेखनीय है जिसमें सभी उद्देश्यों की पूर्ति में राष्ट्र के युवाओं का महत्वपूर्ण योगदान आवश्यक है।

युवा ही राष्ट्र की रीढ़ हैं और युवाओं से आने वाले राष्ट्र के भविष्य का निर्धारण किया जा सकता है जिस राष्ट्र के युवा जितने जागरुक रहेंगे उतना ही उस राष्ट्र की प्रगति होती रहेगी।